

असफलता से सफलता की ओर

आखिरकार प्रक्षेपण की घड़ी आ ही पहुंची। इस क्षण के लिए हम लोगों ने सात बरस अथक परिश्रम किया था। हमारे दल के सभी लोग सांस थामे भारत के पहले उपग्रह प्रक्षेपण यान, यानी सैटेलाइट लॉन्च वाहिकल एसएलवी-३ के प्रक्षेपण की प्रतीक्षा कर रहे थे।

उल्टी गिनती शुरू हुई- टैन, नाइन, ऐट, सेवेन, सिक्स, फ़ाइव, फोर, थ्री, टू, वन... लिफ्ट ऑफ़! पहले चरण का प्रदर्शन बहुत बढ़िया रहा। हम मंत्रमुग्ध खड़े देख रहे थे, हमारी आशाएं एसएलवी-३ के रूप में उड़ान भर रही थीं।

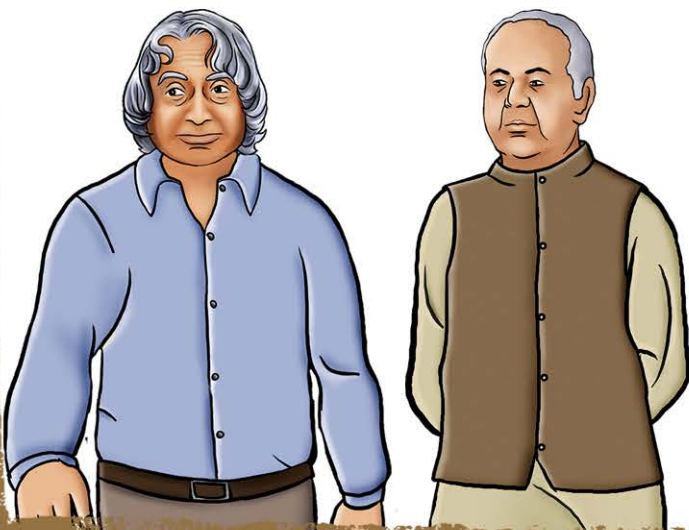
अचानक जैसे सपना टूटा - दूसरा चरण नियन्त्रण से बाहर हो गया और तीन सौ सत्रह सेकेण्ड बाद उड़ान समाप्त करनी पड़ी। पूरा ढांचा समुद्र में जा गिरा। हमारी आशाएं धराशायी हो गयीं। एक पल जादू था और दूसरे ही पल गहरी हताशा।

हम में से ज्यादातर के लिए ये घटना एक बड़ा सदमा थी। मैं क्रोध और हताशा से भर उठा।

एक संवाददाता सम्मेलन का आयोजन किया गया था जिस में प्रक्षेपण की असफलता के कारणों पर चर्चा होनी थी। मैं एसएलवी-३ की असफलता के लिए खुद को जिम्मेदार मान रहा था और मन ही मन डर से कांप रहा था।

मैं जानता था कि संवाददाता सम्मेलन में मेरी और मेरे दल की खूब आलोचना होगी। लेकिन हमारे संगठन के अध्यक्ष प्रॉफ़ेसर सतीश धवन ने मुझ से माइक ले लिया और आत्मविश्वास के साथ सभी प्रश्नों के उत्तर दिए। उनके अविचलित रहने और विचारों की स्पष्टता से मैं सचमुच बहुत प्रभावित हुआ।

प्रॉफ़ेसर धवन ने कहा, “ये अभियान बहुत जटिल होते हैं। हमें पता लगाना होगा कि गलती कहां हुई, गलती ठीक करनी है और फिर निश्चित रूप से देखना है कि ऐसी गलती दोहराई न जाए।”



BookBox

www.bookbox.com

© BookBox. All Rights Reserved.

और फिर उन्होंने कहा, “मुझे पूरा विश्वास है कि ठीक एक साल के अन्दर हम एक उपग्रह को सफलतापूर्वक पृथ्वी की कक्षा में स्थापित करने का लक्ष्य प्राप्त कर पाएंगे!” उनके इस वाक्य ने मेरी बहुत हिम्मत बंधायी और मैं जोश से भर उठा। पिछले सप्ताहभर मैं नाममात्र ही सोया था, मैं सीधा अपने कमरे में गया और बिस्तर पर जा गिरा।

ठीक एक साल बाद १८ जुलाई १९८० को एक बार फिर पूरे देश की निगाहें हम पर थीं। भारतीय अन्तरिक्ष कार्यक्रम का भविष्य बदल देनेवाले प्रक्षेपण की घड़ी आ पहुंची थी। तड़के ही एसएलवी-३ ने उड़ान भरी।

उपग्रह कक्षा में सफलतापूर्वक स्थापित हो चुका था और तब मैंने अपने जीवन के सबसे महत्वपूर्ण शब्द बोले, “मिशन डायरेक्टर कॉलिंग ऑल स्टेशन्स। सभी चरण सफलतापूर्वक पूरे कर लिए गए हैं और उपग्रह रोहिणी अब अपने ग्रह-पथ में है।”

चारों ओर से उल्लासभरी आवाजें उठने लगीं! जब मैं इमारत से बाहर निकला तो मेरे सहकर्मियों ने मुझे कंधों पर उठा लिया और जलूस बना कर प्रक्षेपण स्थल की ओर ले चले। वो मेरे जीवन का सबसे गर्वभरा और सबसे सुखद क्षण था।

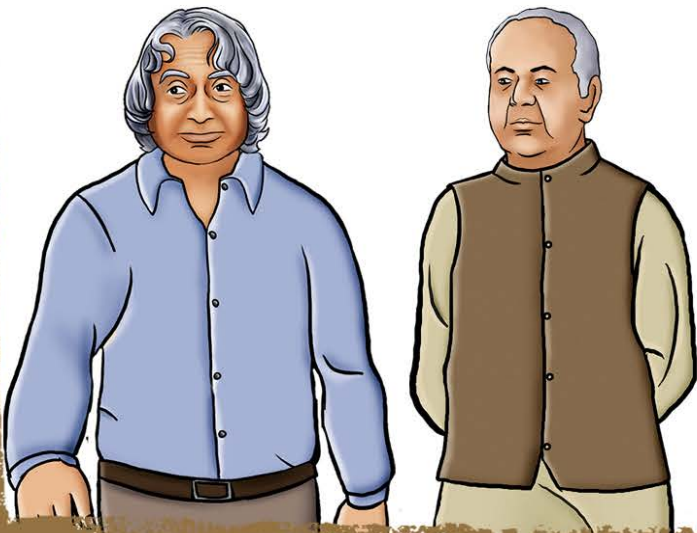
मुझे अपने दिल पर बहुत गर्व हुआ। पूरा देश उत्साह से भर उठा। भारत, उपग्रह प्रक्षेपित करने की क्षमता से सम्पन्न देशों के छोटे से समूह में शामिल हो गया था।

हर अखबार के पहले पृष्ठ पर उपग्रह के सफल प्रक्षेपण की खबर थी। एक बार फिर संवाददाता-सम्मलेन हुआ। मैंने प्रॉफ़ेसर धवन से अनुरोध किया कि संवाददाता-सम्मलेन वे ही सम्बोधित करें।

लेकिन इस बार उन्होंने माइक मेरी ओर करके मुझे ही प्रश्नों के उत्तर देने दिए। उन्हें पता था कि इस परियोजना पर मैंने कितना श्रम किया है और उन्हें लगा कि प्रश्नों के उत्तर मुझे ही देने चाहिए।

उस दिन मैंने सीखा कि दल का नेता अपने दल का मार्गदर्शन कैसे करता है - वो असफलता का दोष खुद ले कर सफलता का श्रेय अपने दल को देता है। मैंने मन-ही-मन सोचा कि काश किसी दिन मैं भी ऐसे ही अपने दल को प्रोत्साहित कर पाऊं!

समाप्त



Click below to follow us:



YouTube

facebook

BookBox

www.bookbox.com

© BookBox. All Rights Reserved.